राष्ट्रिय - संस्कृत - संगोष्ठी

मन्त्रचिकित्सा एवं रोगनिदान

4-5 जनवरी, 2018

नाम ....

पद एवं संस्था का नाम ....

....

शोधपत्र का शीर्षक ....

....

स्वागत एवं आयोजन समिति

- प्रो. बीना अग्रवाल (09414442037)
- डॉ. सुनीता शर्मा-I (09928024290)
- डॉ. राजेश कुमार (09460458459)
- डॉ. सुनीता शर्मा-II(09828133893)
- डॉ. चन्द्रमणि चौहान (09828158785)
- डॉ. ज्योत्स्ना वशिष्ठ (09950034281)
- डॉ. महिपाल यादव (09460387399)
- डॉ. मोनिका जैन (08094683992)
- डॉ. नरेश कुमार मीणा (09414251701)
- डॉ. घनश्याम बैरवा (09829117713)
- डॉ. विजय सिहं मीणा (08764000064)
- डॉ. प्रीति विजय (09829126800)
- काना राम रैगर (08384904831)
- ईश्वर सिहं शेखावत (08952821143)

कार्यालय सहयोग

श्री सम्पतराज सैन (09982908078)
श्री मानसिहं , श्री अनूप सिंह

संस्कृत विभाग : 0141-2711071 - एक्स. 530,531,532
ई-मेल : sanskrituniraj@yahoo.co.in

संयोजक
डॉ. रामसिंह चौहान
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

श्रीमान्/श्रीमती ....

....

....

प्रेषक :

समन्वयक
डॉ. हेमन्त कृष्ण मिश्र
प्राचार्य-सेठ श्री सूरजमल तापड़िया आचार्य
संस्कृत महाविद्यालय, जसवन्तगढ़, नागौर

बुक-पोस्ट

राष्ट्रिय - संस्कृत - संगोष्ठी

मन्त्रचिकित्सा एवं रोगनिदान

4-5 जनवरी, 2018

संयोजक
डॉ. रामसिंह चौहान
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

समन्वयक
डॉ. हेमन्त कृष्ण मिश्र
प्राचार्य-सेठ श्री सूरजमल तापडिया आचार्य
संस्कृत महाविद्यालय, जसवन्तगढ, नागौर

संस्कृत विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर एवं सेठ श्री सूरजमल तापडिया मेमोरियल ट्रस्ट जसवन्तगढ (नागौर) के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

फोन - 0141-2711071-2701
ईमेल - sanskrituniraj@yahoo.co.in

मन्त्रचिकित्सा एवं रोगनिदान

आज के इस भौतिक युग में सम्पूर्ण मानव जाति विभिन्न आधि-व्याधियों से ग्रस्त हैं। नाना प्रकार के शारीरिक मानसिक रोगों से ग्रस्त हैं। सभी प्रकार के रोगों के निदान एवं चिकित्सा हेतु वर्तमान में एलोपैथिक, यूनानी , होम्योपैथिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धतियां प्रचलित हैं। परन्तु यदि हम सही रूप में आंकलन करें तो काइे ́ भी चिकित्सा पद्धति सामान्य एवं असाध्य रोगों के समूल उन्मलून में कारगर साबित नहीं हो पा रही हैं।

विश्ववन्दनीय भारत देश के गौरव वेदों में विभिन्न प्रकार की जटिल से जटिल बीमारियों की चिकित्सा वैदिक मन्त्रों से समलू समाप्त हो सकती हैं। विशषेत: अथर्ववेद में मंत्रों से रोगनिदान, तंत्र-मत्रं साधन सहित कई अनूठे रहस्य/प्रयोग बताये गये हैं। वैदिक काल में वेद मंत्रों की साधना से न जाने कितने ही रोगियों के रोग नाश, आत्मिक उन्नति के उदाहरण मिलते हैं। इसी बात को महाभाष्यकार पतंजलि, वेद भाष्यकार सायण जैसे विद्वानों ने कई बार सोदाहरण प्रमाणित/साबित किया हैं। 'वैदिक मन्त्रविज्ञान एवं चिकित्सा ' मन्त्रजप एवं साधना व चिकित्सकीय प्रयोगों के सन्दर्भ में जप व हवन की विशिष्ट विधियों को प्रस्तुत कर उद्गीथमन्त्र एवं महाव्याहृति मन्त्रों के प्रभाव व प्रयोग पक्षों पर व्यापक सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक पद्धति द्वारा विविध रोगों का निदान संभव हैं।

संस्कृत साहित्य का विशाल वाड्मय अनेकानेक रत्नों का खजाना हैं। वैदिक और लौकिक संस्कृत में विधाओं, कलाओं काव्यविधाओं का सौंदर्य समाहित हैं। संस्कृत काव्यों में अनेकानेक शक्तियाँ हैं, जिनसे समाज का भौतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन लाभान्वित होता रहा हैं। मानव सामान्य रूप से स्थूल तत्व के रूप में रक्त, मांस और हड्डियों का बना पुतला हैं। वात, पित्त और कफ की कमी से शारीरिक अस्वस्थता से ओतप्रोत मानव रहता ही हैं। मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य मानव की हर प्रकार की प्रगति के लिये अनिवार्य हैं। अत: संस्कृत साहित्य में तन्त्र और मन्त्रों की उपयोगिता प्राचीन काल से रही हैं। देवी-देवताओं की प्रसन्नता के लिये मन्त्र स्तुति वेद में उपलब्ध हैं। इन मन्त्रों की शक्ति जहाँ शारीरिक बल, सुदृढता प्रदान करती है वही मानसिक दुर्बलता को हटाकर, मन को मजबूत बनाकर सकारात्मक प्रवाह उत्पन्न करती है जो मनुष्य को सबल बनाती हैं। इन मंत्रों के शुद्ध उच्चारण से मनुष्य मे ं भी जीवन संचार हो जाता हैं। महामृत्युजंय मंत्र तथा बीज मंत्र अत्यन्त उपयोगी और प्रत्यक्ष रूप से अनुभूत हैं। मान्यता है कि सवालाख जप अनुष्ठान ''ऊँ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ऊर्वारूकमिव बन्धानात् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्'' से स्वास्थ्य लाभ होता हैं। इसी प्रकार ''ऊँ हों जूं स:'' ''स: जूं हों ऊँ'' संक्षित मंत्र (विपरीत) उल्टा सीधा दोनों प्रकार का जप भी लाभकारी सिद्ध होता हैं। इसी प्रकार ''दुर्गासप्तशती'' में भी दुर्गा का बीजमंत्र ''ऊँ ऐ ं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चै''मंत्र, मानसिक शाि त एवं गृहशाि त प्रदान करता हैं।

मत्रंशक्ति का प्रभाव नवग्रहों की शांति हेतु भी किया जाता है-

''ब्रह्मामुरारि त्रिपुरान्तकारी भानुशशिभूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्चशुक्र: शनिराहुकते व: सर्वग्रहा: शान्तिकरा: भवन्तु''

जिन व्यक्तियों का स्वास्थ्य, दिमाग के रोगों (Brain Related Dies) से युक्त है बच्चों की मेधा के तीव्र करने हेतु महाशक्ति के रूप में गायत्री का मन्त्रजाप किया जाता हैं। ऊँ भू: र्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् इस मन्त्रौषधि की स्व प्रसिद्ध एवं उपादेयता को देखाते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसे अपनाया जाता है तो यह एक सम्पूर्ण मानव जाति के लिए बहुआयामी रूप में मील का पत्थर साबित हो सकता हैं।

परामर्श-समिति

प्रो. महावीर अग्रवाल (हरिद्वार)
प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
प्रो. सुभाष वेदालंकार (जयपुर)
प्रो. रूप किशोर शास्त्री (हरिद्वार)
प्रो. मदनमोहन अग्रवाल (दिल्ली)
देवर्षि कलानाथ शास्त्री (जयपुर)
प्रो. बलवीर आचार्य (रोहतक)
प्रो. अर्कनाथ चौधरी (गुजरात)
प्रो. लक्ष्मी शर्मा (जयपुर)
प्रो. विनोद शास्त्री (जयपुर)
डॉ. जया दवे (जयपुर)
प्रो. रमाकान्त पाण्डे (दिल्ली)
प्रो. सुरेन्द्र कुमार (रोहतक)
प्रो. कमलेश कुमार चौकसी (गुजरात)
प्रो. श्रीकृष्ण शर्मा (जोधपुर)
प्रो. सत्यप्रकाश दुबे (जोधपुर)
प्रो. डी. सी. जैन (जोधपुर)
प्रो. यादराम मीणा (जोधपुर)

संवीक्षा-समिति

प्रो. हरिराम आचार्य (जयपुर)
डॉ. बसन्त जैटली (जयपुर)
प्रो. माणिक्य लाल शास्त्री (जयपुर)
डॉ. मदनलाल शर्मा (जयपुर)
प्रो. भास्कर श्रोत्रिय (जयपुर)
प्रो. शालिनी सक्सैना (जयपुर)
डॉ. नाथूलाल सुमन (जयपुर)
प्रो. एल.एन. शास्त्री (जयपुर)
प्रो. नीरज शर्मा (उदयपुर)
प्रो. गजानन मिश्र (पिलानी)
प्रो. मामराज शर्मा (सीकर)
प्रो. दामोदर शास्त्री (लाडनू)
डॉ. जे. एन. विजय (जयपुर)
डॉ. सुरेश शर्मा (चिराना)
डॉ. रामविलास शर्मा (चिराना)
डॉ. जितेन्द्र अग्रवाल (जयपुर)
डॉ. चन्द्रप्रकाश शर्मा (हाथौज)
डॉ. प्रेमराज (रामसिंहपुरा, जयपुर)

प्रस्तावित संगोष्ठी विषयक प्रमुख उपबिन्दु

1. वैदिक मंत्रों की वैज्ञानिकता
2. वैदिक मंत्रों द्वारा रोग निदान
3. यज्ञ और रोग निदान
4. पौराणिक मन्त्र चिकित्सा
5. काव्यस्तुतियां द्वारा रोग निदान
6. प्राकृतिक पद्धति द्वारा रोग निदान
7. योग एवं मन्त्रचिकित्सा
8. आयुर्वेद एवं मन्त्रचिकित्सा
9. ज्योतिषशास्त्र द्वारा रोग निदान
10. वास्तुशास्त्र द्वारा रोग निदान
11. सामुद्रिक शास्त्र द्वारा रोग निदान
12. अरैबिक पद्धति के द्वारा रोग निदान
13. तन्त्र शास्त्र द्वारा रोग निदान
14. आगम पद्धति द्वारा रोग निदान
15. यूनानी पद्धति द्वारा रोग निदान
16. होम्योपेथी पद्धति द्वारा रोग निदान
17. पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति द्वारा रोग निदान

शोध सारांश

शोध आलेख एवं सारांश कम्प्यूटर टंकित (A-4 page, Double space English font-12 Times New Roman), Hindi font-16 Devlys 010/Krutidev 010 में एम.एस. वर्ड में दिनांक 25.12.2018 तक ई-मेल sanskrituniraj@yahoo.co.in पर या कोरियर/डाक द्वारा ''संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, आई.सी.आई.सी.आई.बैंक के पीछे, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर, राजस्थान पिन-302004'' पर प्रेषित करें।

पंजीकरण

प्रतिभागिता हेतु पंजीकरण राशि :-

प्राध्यापक व अन्य प्रतिभागी : **500/-**

शोध छात्र-छात्राएँ : **300/-**

पंजीयन कार्य दिनांक 15.12.2017 से (प्रात: 11.00 से मध्याह्न 3.00 तक) संस्कृत विभाग में प्रारम्भ हो जाएगा। पंजीकरण राशि नकद जमा होगी, हस्तांतरणीय अथवा पुनर्देय (रिफण्डबेल) नहीं होगी।

नोट : - प्रतिभागीयो द्वारा पूर्व में सूचना देने पर ही आवास की व्यवस्था कि जायेगी।